शिवरात्रिव्रत के माहात्म्य की कथा

इस व्रत के माहात्म्य की अनेक कथाएँ ग्रन्थों में पायी जाती हैं। यहाँ पर हम स्कंदपुराण की कुछ कथाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करेंगे। पूर्वकाल में कोई विधवा ब्राह्मणी थी, जिसकी प्रकृति बड़ी चंचल थी। वह कामभोग में आसक्त रहती थी। अत: किसी कामी – चाण्डाल के साथ उसका संबन्ध हो गया। उसके गर्भ से दुरात्मा चाण्डाल को एक पुत्र हुआ, जिसका नाम दुस्सह था। वह पुत्र बड़ा ही दुष्टात्मा था। वह सब धर्मों के विपरीत ही आचरण करता था। महान् पापपूर्ण प्रयोगों के द्वारा वह सदा नये – नये पाप प्रारम्भ करता था। वह जुआरी, शराबी, चोर, गुरुस्त्रीगामी, वधिक तथा चाण्डालोचित कर्म करनेवाला था।

एक दिन वह अधर्मी मन में कोई बुरी वृत्ति लेकर किसी शिवालय में गया। उस दिन शिवरात्रि थी। वह रात में भगवान् शिव के पास उपवासपूर्वक रहा और वहाँ पास ही दैवात् होती हुई शैवशास्त्र की कथा सुनता रहा। वहाँ उसे लिंगस्वरूप भगवान् शिव का दर्शन हुआ। दुष्ट होते हुए भी उसने एक रात व्रत किया और शिवरात्रि में जागता रहा। उसी शुभ कर्म के परिणाम से उसने पुण्ययोनि प्राप्त करके बहुत वर्षोंतक पुण्यात्माओं के लोक में सुख – भोग किया। तदनन्तर वह राजा चित्रांगद का पुत्र हुआ। उसमें राजराजेश्वरों के लक्षण थे। वहाँ वह विचित्रवीर्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसका रूप सुन्दर था। उसने बहुत बड़ा राज्य प्राप्त करके भी अपने मन में अहंकार नहीं आने दिया। भगवान् शिव की भक्ति करते हुए वह सदा शिवधर्म के पालन में ही तत्पर रहा। शिव – संबंधी शास्त्रों को मान्यता देकर वह उन्हीं के अनुसार शिव की पूजा किया करता था। भगवान् शिव की कथा सुनने से उसमें प्रेम के सभी लक्षण प्रकट हो जाते थे। उसे शिवजी की प्रेमलक्षणा भक्ति प्राप्त हुई। भगवान् शिव के ध्यान में निरन्तर संलग्न रहने के कारण उसकी सारी आयु व्रत में ही बीती।

भगवान् शिव इस संसार में पशुओं (अज्ञानियों) तथा ज्ञानियों को समानरूप से सुलभ हैं। शिवरात्रि के उपवास से राजा को उत्तम ज्ञान प्राप्त हुआ। उस ज्ञान से सब प्राणियों में निरन्तर समभाव का अनुभव हुआ। तत्पश्चात् यह अनुभव हुआ कि इस संसार में कहीं कोई भी ऐसी वस्तु नहीं है जो भगवान् शिव से रहित हो। राजा विचित्रवीर्य यह ज्ञान प्राप्त करके भगवान् शिव के अत्यन्त प्रिय भक्त हो गये। शिवरात्रि के उपवास से उन्होंने सायुज्य मुक्ति प्राप्त कर ली। उसी पुण्य के प्रभाव से उन्होंने शिवजी की लीला में योग देने के लिये शिवजी से ही दिव्य जन्म प्राप्त किया। दक्ष – कन्या सती से जब शिवजी का वियोग हुआ तब उनके जटा फटकारने के शब्द से उन्हीं के मस्तक से जो वीरभद्र नामक वीर उत्पन्न हुआ, वह राजा विचित्रवीर्य ही है। वही दक्ष – यज्ञ का विनाश करनेवाला हुआ।

शिवरात्रिव्रत के माहात्म्य से संबंधित एक दूसरी कथा इस प्रकार है। प्राचीन काल में शशिबिन्दु नाम से विख्यात एक चक्रवर्ती राजा थे। उनकी पतिव्रता स्त्री उन्हें प्राणों से भी प्रिय थी। राजा के पास एक सुन्दर सुवर्णमय आकाशगामी विमान था, जिसके द्वारा वे अपनी इच्छा के अनुसार सम्पूर्ण लोकों

में घूमते रहते थे। एक समय फाल्गुन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी (शिवरात्रि) का पर्व आने पर राजा शशिबिन्दु उत्तम प्रभास क्षेत्र में आये। वहाँ उन्होंने बहुत से महर्षियों को देखा, जो जप एवं होम में तत्पर हो रात्रि में जागरण करने के लिये सोमनाथजी के सम्मुख बैठे हुए थे। राजा ने भी सोमनाथ का दर्शन और प्रणाम करके विधिपूर्वक पूजन किया और क्रमशः भक्तिभाव से उन सभी ऋषि-मुनियों का स्वागत सत्कार करके वे समीपस्थ केदारलिंग के पास चले आये। वहाँ विचित्र पुष्पमालाओं, नैवेद्यों तथा मनोहर वस्त्राभूषणों से केदारेश्वर की पूजा की और वहीं एकाग्रचित्त हो जागरण किया। तब वे सब मुनि कौतूहलवश राजा के समीप गये और इस प्रकार बोले-'राजन्! तुम सोमेश्वर देव को छोड़कर केदारजी के आगे जो जागरण और पूजन करते हो, इसका क्या कारण है?'

राजा ने कहा-विप्रवरो! आप लोग सुनें, यह मेरे पूर्वजन्म का वृत्तान्त है। पहले जन्म में मैं ब्राह्मणों की पूजा करनेवाला शूद्र था। मेरी जन्मभूमि सौराष्ट्र देश में थी। एक समय वहाँ भयंकर अनावृष्टि हुई। उस समय मैं भूख से व्याकुल होकर प्रभास क्षेत्र में चला आया। यहाँ आने पर हरिणी के मूलभाग में स्थित एक सुन्दर सरोवर पर मेरी दृष्टि पड़ी, जो रामसरोवर के नाम से प्रसिद्ध है। वह तड़ाग कमलसमूह से सुशोभित था। मैं थका-माँदा तो था ही। उस सरोवर को देखकर मैंने उसमें स्नान किया तथा देवताओं और पितरों का तर्पण करके उसके स्वच्छ जल को पीया। तत्पश्चात् मेरी स्त्री ने कहा-'इन कमलपुष्पों को ले लीजिये। यहाँ से निकट ही एक सुन्दर स्थान दिखायी देता है। वहाँ चलकर इन फूलों को बेचेंगे, जिससे कुछ भोजन की व्यवस्था हो सकेगी।' पत्नी के यों कहने पर मैं जल के भीतर उतरा और बहुत-से कमल के फूल लेकर नगर की ओर चला। वहाँ पहुँचकर सड़कों, चौराहों और तिमुहानियों पर घूमता रहा; परन्तु किसी ने भी मेरे फूल नहीं लिये। इतने में दिन डूब गया और मैं अपनी पत्नी के साथ एक मन्दिर में आकर सो गया। वहाँ स्त्रीसहित मुझे भूख अधिक पीड़ा देने लगी। इतने में ही मैंने देखा किसी देवालय में होम और जागरण हो रहा है। तब मैं भी उठकर वहाँ गया और रुद्रेश्वर नामक वृद्धिलिंग (केदारेश्वर) का दर्शन किया। उस समय वहाँ अनंगवती नामक एक वेश्या शिवरात्रि-व्रत में संलग्न हो नृत्य, गीत और उत्सव आदि के द्वारा भगवान् के सामने जागरण कर रही थी। मैंने एक मनुष्य से पूछा-'भाई! यहाँ रात्रि में जागरण किसलिये होता है? यह नाच, गान और उत्सव में लगी हुई कौन स्त्री दिखायी दे रही है?' उसने बताया-'आज शिवधर्मोत्तरपुराण में प्रतिपादित शिवरात्रि है। यह धर्मपरायण स्त्री अनंगवती नाम की वेश्या है, जो कल्याणमय शिवरात्रि-व्रत करके जागरण कर रही है। जो कोई मनुष्य शिवरात्रिव्रत करता है, उसे दुःख-दारिद्र्य और बंधन की प्राप्ति नहीं होती। दुष्टग्रह, अरिष्टयोग, रोग अथवा भय भी उसके पास नहीं आता। वह उत्तम कुल में उत्पन्न हो सुख एवं सौभाग्य से युक्त होता है। तेजस्वी, यशस्वी तथा पूर्णतः कल्याण का भागी होता है।'

उस मनुष्य की बात सुनकर मेरे मन में वह व्रत करने का निश्चित विचार हुआ। मैंने सोचा 'अन्न का अभाव होने के कारण उपवास तो मुझे विवश होकर करना ही है। अतः स्नान करके इन

कमल के फूलों से भगवान् महेश्वर की पूजा करूँ।' तब मैंने स्त्रीसहित स्नान करके भक्तिभाव से कमल के फूलों द्वारा भगवान् रुद्रेश्वर का पूजन किया। पत्नी के साथ रातभर वहाँ जागता रहा। सवेरा होने पर वेश्या ने मुझसे कहा–'अपने फूलों का मूल्य तीन भार सोना ले लो।' परन्तु मैंने सात्त्विक भाव का आश्रय लेकर उसका दिया हुआ मूल्य स्वीकार नहीं किया। भिक्षा माँगकर जीवन–निर्वाह करने लगा। दीर्घकाल के पश्चात् मेरी मृत्यु हुई। उस समय यह मेरी प्राणप्यारी पत्नी मेरे शरीर को लेकर चिता की आग में प्रवेश कर गयी। उस पूजन और जागरण के प्रभाव से मैं पूर्वजन्म की बातों को स्मरण रखनेवाला चक्रवर्ती राजा हुआ। एक बार संयोगवश यह व्रत किया था, जिसका यह महान् फल प्राप्त हुआ। अब मैं भक्तिभाव से यथावत् सामग्री के साथ जो इस व्रत का पालन करता हूँ, इसका भविष्य में क्या फल होगा–यह मैं नहीं जानता।

यह सुनकर उन ब्राह्मणों के नेत्र आश्चर्य से खिल उठे। उन्होंने 'साधु–साधु' कहकर राजा की भूरि–भूरि प्रशंसा की। उन्होंने स्वयं भी उस स्वयंभू–लिंग का पूजन किया। राजा शशिबिन्दु उस केदारलिंग के प्रसाद से देव–दुर्लभ उत्तम सिद्धि को प्राप्त हुए। अनंगवती वेश्या शिवरात्रि–व्रत तथा केदारलिंग के प्रभाव से रम्भा नामक अप्सरा हुई।

शिवरात्रिव्रत के माहात्म्य की कुछ कथाएँ शिवपुराण में भी पायी जाती हैं। उदाहरण के लिये रुद्रसंहिता अध्याय 17 – 19 में वर्णित यज्ञदत्त – कुमार गुणनिधि की कथा, जिसने अनजानें में शिवरात्रिव्रत करके कालान्तर में कुबेर का पद प्राप्त किया।[1] इसी प्रकार कोटिरुद्रसंहिता, अध्याय 40 में बताया गया है कि अनजान में शिवरात्रिव्रत करने से एक भील पर शंकरजी की कृपा हुई फलस्वरूप 'गुह' नाम से उसकी ख्याति हुई और यथासमय श्रीराम ने उसके घर पधार कर मित्रता का संबंध स्थापित किया।

(उपर्युक्त कथाएँ गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के संक्षिप्त स्कंदपुराणांक के पृ. 70–71 एवं 977–978 से ली गयीं हैं।)

❀❀❀❀❀❀

काल से पीड़ित मनुष्य को मन्त्र, तप, दान, मित्र और बन्धु–बान्धव कोई भी नहीं बचा सकते।

न मन्त्रा न तपो दानं न मित्राणि न बान्धवाः।
शक्नुवन्ति परित्रातुं नरं कालेन पीडितम्।।

(पद्ममहापु. भूमिखण्ड 81/38)

1. कुबेरपद की प्राप्ति की कथा इसी पुस्तक में अन्यत्र दी गयी है।